



# NIRMAN IAS

## TEST SERIES

996 1st Floor Mukherjee Nagar  
 (Near Gandhi Vihar Bandh) Delhi-110009  
 Ph.: 011-47058219, 9911581653,  
 9717767797

GS ANSWER SHEET - 9

03 SEPTEMBER 2017

Name Ratan Deep Gupta

E-mail: \_\_\_\_\_

Subject Errata

Contact No. \_\_\_\_\_

Test ID \_\_\_\_\_

Registration ID \_\_\_\_\_

### EVALUATION PARAMETERS

1. Introduction
2. Context Understanding
3. Content Understanding
4. Language Understanding
5. Structure Presentation Understanding
6. Conclusion

### ANSWER REPORT CARD

1.			
2.			
3.			
4.			
5.			
6.			
7.			
8.			
9.			
10.			
11.			
12.			
13.			
14.			
15.			
16.			
17.			
18.			
19.			
20.			
21.			
22.			
23.			
24.			
25.			

- ☞ No candidate would be permitted to leave the examination hall without prior permission of the invigilator.
- ☞ Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registrations ID and Test ID).
- ☞ The candidate (himself/herself) should fill the Index columns.
- ☞ Nothing should be written in the right and left margin.
- ☞ The candidate should not write anything in the answer sheet that which derogates the dignity of the organization.

25

Total Marks Secured

Remarks:

Signature of Examiner



② 'क' वो सबसे धनवान है जो कम-से-कम में संतुष्ट है, क्यों संतुष्टि प्रश्निकी दैत्यत है।

"इस धरा में सभी की अवश्यकताओं के पूर्ण करने की क्षमता है परन्तु किसी के लालच की नहीं।" - महामा गांधी

गांधी जी का उपरोक्त कथन इसे शास्त्रों में वर्णित संतोष-परम् सुखम् की उक्ति को चरितार्थ करता है। संतोष वह धर है जिसके ओर विश्व की सजल सम्पद का प्रोल कीका पड़ जाता है। कहा भी जाता है कि-

"गोदम्, गजधर बाज़धर और रत्न धन रवान जब आवें संतोष इन सब धर धरि समान।"

संतुष्टि का यह भाव किसी व्यक्ति; समाज इवं देश के सतत विकास की आधारशिला का प्रिमाणि

करता है। यह ~~विवित~~ के साथ ही परिहित सरिल धर्म नहीं मार्क की उक्ति को चरित्याच करते हुए विश्व बंधुत्व की भावना को सुनिश्चित करता है।

संतोष वह धन है जो ~~यक्ति~~ को प्रकृति के साथ सामंजस्य विनाकर उसका ~~यागप्रवक्ता~~ अपमोग की चेतना देता है। इस प्रकार का अपमोग ओने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक स्वाध, सुन्दर रख लगूद्ध धरा को सजोता है।

अद्यपि वर्तमान में संतुष्टि एवं भह धन कहीं रखी जा रहा है जिसके फलस्वरूप ~~यक्ति, समाज~~ रख रख्ने पर इसके दुष्प्रभावों को देखा जा रहा है।

आज का ~~यक्ति~~ काम से कम समय में आधिक से अधिक औतिक संसाधनों को उकड़ा करते

अतः यह श्री इली असंतोष से पीड़ित है।  
 आश्चर्य नहीं कि देश में प्रत्येक 4 मिनट में  
 एक विवाहिता देहज की बलि वेदी पर चढ़ दी  
 जाती है। समाज में आर्थिक संसाधनों की  
 उपलब्धि को ही सक्रीय उपलब्धि माना जाता है।  
 फलस्वस्प्त भात-चिता छारा बच्चों पर अत्यधिक  
 दबाव डालकर बच्चों की लाचि के विपरीत पाठ्यक्रमों  
 में प्रवेश लेने का दबाव बनाया जाता है।

इसी प्रकार आवश्यक वस्तुओं की कमी  
 हीपरे पर कालागारी शुरू हो जाती है लोग  
 अपनी वास्तविक आय दिपाकर आयकर की चोरी  
 करते हैं।

असंतुष्टि का यह भाव विभिन्न सामाजिक,  
आर्थिक, राजनीतिक एवं पर्यावरणीय समस्याओं को  
 ज़म्मु देता है। आज के प्रतिष्पद्धतिक भुग्ने



परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए नकल का सहाया  
लेना, विभिन्न गिरोहों द्वारा नकल का सामूहिक  
च्यापर करना, विभिन्न अस्पतालों में स्वास्थ्य  
शेवाओं के लिए आति उच्च कीमते वस्त्रल  
करना, जिकिसको द्वारा फिल्म्स के स्वास्थ्य  
परीक्षणों एवं औषधियों का परामर्श देना इस  
बहुती भौतिकता एवं जिरते भैतिकता एवं  
संतुष्टि के पैमानों के तुद उपाय है।

इसी क्रम में तकनीकी उन्नति को भी देखा  
जा सकता है। तकनीक के उपयोग ने जदों एक  
ओर भानव जीवन को सुगम बनाया है तो वही  
भानव की सर्वशक्तिशाली बनने की आकांक्षा ने  
“परमाणु बम” जैसे सर्वनिःशक्ति अस्त्रों का भी  
प्रिर्जन कराया है।

आज विट कवाइन के माध्यम से किरोति  
मांगने, सायबर हमले से किसी राष्ट्र को पंगु-



बनाने द्ये लेकर 'डिजाइनर बेबी' जैसे  
तकनीकी आपास ~~इसी~~ मानवी असंतोष की  
उपज है।

आज राष्ट्र अपने गमन विकास की अपेक्षा  
अपने जी.डी.पी. के ओँकड़ों पर आधिक चर्चा  
देते दिखते हैं। पर्यावरणीय स्वरोकर्तों  
पर श्री इसका सीधा असर देखने को मिल  
रहा है।

बढ़ता प्रदूषण लोगों की मृत्यु का कारण  
बन रहा है तो ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु  
परिवर्तन जैसी समस्याएँ सुँह दोये रख़ी हैं।  
हमारा जल, जंगल, जमीन, सभी प्रदूषित हो रहे हैं,  
जैव-विविधता रक्तेरे में है परन्तु मनुष्य की  
आकांक्षाएँ कुत्यांचे मार रही हैं।

सत्ता की शर्करा के निरंकुश तानाशाहियों को  
जन्म दिया है, लोकतंत्र को दबाया जा रहा है।  
फिर चोट वह म्यांगार है या पाकिस्तान अल्पसंस्थकों



को प्रतागित किया जा रहा है। विश्व में सम्बन्धों के मेलिंग पॉर्ट कहे जाने वाले देश अमेरिका में भी जोर काले का भ्रेद उमर आया है, इसके अवधि सब मानव का असंतोष लंग आधिक से आधिक शावित हवं संसाधनों को एकलित करने की लालसा नहीं तो और क्या है?

यदि मनुष्य संतुष्ट है तो इसका सीधा प्रभाव लमज रखं राष्ट्र पर पड़ता है। यक्ति की संतुष्टि का भाव उसे जीता में वर्णित प्रियकाम कर्म योग की प्रेरणा देता है। यहके नायम से एक और एक अपनी प्रगति के प्रयास भरता है तो वही द्वितीय "किसी भी कीमत पर लफलत" का मर्फ नहीं अपनाता है।

इसका सामाजिक प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यक्ति की समरसता अंततः परिवार हवं लमज के गाव्यम से देश के परिवर्तन में प्रकट होती है। संश्वता यही कारण है कि भूतान जैसे देश ग्रास हैं परिसंक्षिप्त



~~को अपनी जी.डी. पी. के ऊपर तरनीद फैलाए।  
आज यह आवश्यक भी है कि राष्ट्र अपने  
आधिक विकास के साथ ही प्रानव विकास  
इत्याकाम को सुनिश्चित का प्रयास करे।~~

~~संतोष के साथ किया गया आधिक विकास  
ही वस्तुतः सतत आधिक विकास को जन्म देता है  
जो कि मावी पीढ़ियों को भ्रष्ट, कुपोषण, गरीबी  
से बचाकर तेज उभकर्त्ता भुग्निता का मार्ग  
प्रशस्त करता है।~~

~~प्राक्ति एवं समाज की संतुष्टि का यही भाव  
एक परिपक्व लोकतंत्र की इच्छितिका का निर्माण  
करता है। यह राष्ट्र की उन्नति को लोकतंत्र  
का मूल आधार बनाता है। सत्ता की भ्रष्ट  
नहीं, आमजन की सद्भागिता इसी संतुष्टि का  
परिणाम होती है।~~



आज वैश्विक द्वौनीतियों चाहा आतंकवाद से निपटना, शरणार्थियों की समस्या का समाधान, जेलवायु परिवर्तन पर अन्तर्राष्ट्रीय संधियों का क्रियान्वयन, गरीबी, कुपोषण जैसी समस्याएँ इत्यादि के समाधान के शूल में चाहिे कुछ हैं तो वह हैं वसुवेव कुदम्बकम् की भावना।

सर्व भक्तु सुखिनः सर्व सन्तु निराभयाः की उकित को परिवर्त्य करके ही इस विद्वव को आधिक सुखद, शांतिशूर्ण, समन्वयवान्, समावेशी एवं समृद्धशाली बनाया जा सकता है और इसके लिए जो सबसे महत्वपूर्ण तथा है, वह है आत्म संतुष्टि की भावना।

पहली भावना ही वह शक्ति है जो भनुप्य को भनुप्य बनाये रखती है, उसे जियों और जीने दो का प्रैसारिक संदेश देती है। जीवन-

के क्षेत्रों में भी प्रेरणायुक्त हवाएँ आशीर्वान बनाये रखती है। उसे प्रेस, कल्पा, तदहुम्लिंग जैसे गुणों से युक्त करती है, इसाविभ्रमिक भाइचारे के लिए प्रेरित करती है और पद्मोद्धारण गांधी के शब्दों में उसे यह सौंदर्य देती है, कि "जिस दिन प्रेम की शक्ति, शक्ति के प्रेरणायुक्त हवाएँ जो जायेगी, उस दिन संसार की समस्त समस्याएँ समाप्त हो जायेगी।"



'प्रव'

भूरु इंडिया की आवारणा : समावयता व उन्नेती

'भारत' मेरे शब्दों को सबसे अनमोल शब्द, जिसके सामने अघ शब्द फीके पड़ जाते हैं। यह वह शब्द है जो न केवल मुझे बल्कि करोड़ों भारतीयों को आशा, उत्तर एवं जोश प्रदान करता है।

यह वही भारत है जो प्राचीनकाल में सोने की इंडिया कहा जाता रहा है। 15 अगस्त 1947 को अपनी सैकड़ों वर्षों की बेड़ियों को काटकर अपने नव्य भव्य रूप में अवतरित यह इंडिया अचारि भारत तब से निस्तर अपनी प्रगति की जाया लिखता रहा है।

इसे निस्तर सामाजिक, आर्थिक, रजनीतिक एवं धर्मान्विक प्रगति के नये आधार जड़े हैं। 95% में देश की साक्षता 18% थी, ए आज

उसे ७५% तक ले आये हैं, देश की  
 ३० बिलियन डॉलर की अधिवेष्टन को आज  
 २.६ बिलियन डॉलर वक्त पहुँचपे में सफल  
 रहे हैं। जो क्रूपोषण की दर ४७% तक तक्ष्य  
 थी उसे आज लामग आधा कर ४५% तक  
 सीमित कर दिया है। चेचक, कान्बाजार, पोलियो  
 जैवी बीमारियों पर पूर्ण नियन्त्रण पा लिया गया है।

अद्यापि इन प्रगतियों के साथ आज यह भी  
 आवश्यकता प्रदर्शन की जाए है कि भारत  
 अपनी पूर्ण संभावनाओं को समुचित दोषन नहीं  
 कर पाया है। १९५१ में खतरे हुआ चीन, उस  
 समय भारत से आर्थिक रूप से कम सम्पन्न था  
 परन्तु आज वह विश्व आर्थिक प्रदायकि बन्ने की  
 ओर बढ़ चुका है।

इसी गंभीर भारत की संभावनाओं का समुचित

दोष करने, इसे ऐसा आर्थिक प्रदान किते जाने तथा समावेशी विकास के माध्यम से सम्भव भारत के लांगी उद्देश्य को परिवर्तय करने के दृष्टिकोण से भारत द्वारा 'भू-शक्ति' की अवधारणा लाई गई है।

भू-शक्ति अपने कल्पना में आर्थिक रूप से सम्पन्न, वैज्ञानिक रूप से सशक्त, सामाजिक रूप से समावेशी भारत की व्यापना का उद्देश्य रखता है।

भू-शक्ति के प्रमुख घटकों में भारत में में-एफेक्चरिंग खेल का विविकास, रोजगार के व्यवस्था उन्वेषण का स्वरूप करना, देश की जी.डी.पी को बढ़ाना, सेवा क्षेत्र का विस्तार जैसे आर्थिक आयाम शामिल हैं।

स्वास्थ्य, सेवा, शिक्षा, आधारशृंखला में

निवेश के माध्यम से मानव विकास को बढ़ा  
एवं सामोर्शी विकास के लक्ष्य की प्राप्ति इसके  
लाभांश्च उद्देश्य हैं।

~~एक जनभागीदारीयुक्त लोकतात्त्विक व्यवस्था,~~  
~~फैचायरों का लक्षाकालीकरण, एक्यना एवं प्रोबोगिकी~~  
~~के माध्यम से एक्यनायों का व्यतेक प्रसाद तथा~~  
~~नीति निष्ठियि में जनभागीदारी इसके प्रमुख~~  
एनप्रैतिक आवास हैं।

इसके लाप्ति पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने  
हुए संघरणीय ऊर्जा के खोजों का आधिकारिक  
उपयोग, उपलब्ध कियाल मानव बल एवं  
जनांकीकीय लामारा का समुचित उपयोग तथा  
असरते हुए नये वैश्विक व्यवस्था में भारत की  
प्रकावी उपलिपि दर्ज कराना श्री नरेश्वर का  
संग है।

स्पष्टता के नये भारत के पाल के  
महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रबुद्ध  
संभासा है।

आज भारत विश्व की सबसे टेज़ी से विकासित  
होने वाली अर्थव्यवस्था बन चुका है (वर्ल्ड बैंक  
रिपोर्ट के अनुसार)। एवं पहचानिंग पार्क  
परियों के आधार पर विश्व की तीसरी सबसे  
बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारत विश्व के सबसे  
बड़े बाजारों में से एक है। स्पष्टता से भारत  
की २.६ (डॉलर) द्विलियन की अर्थव्यवस्था भवित्व  
में टेज़ी से बढ़ेगी।

भारत में वर्तमान में लगभग ४० करोड़ लोग  
३८ वर्ष से कम आयु हैं जहाँ से अमेरिका की  
कुल आबादी के देशों से भी अधिक है।

इस विशाल जनकियता का लाभ  
भारत की संसाधनों द्वारा है, वर्तमान में इन्हनें  
बड़ा भाग कियी अर्थ देश के पाल नहीं है।



प्रश्न संख्या  
Question No.

~~वैज्ञानिक एवं तकनीकी की प्रगति में भी भारत का भारत ने विश्व नवे आयाम जोड़ दे। भारत का सूचना-प्रौद्योगिकी क्षेत्र के विश्व को अपनी अद्भुत देखाएँ प्रदान कर रहा है।~~

पी.एस.एल.बी., चन्द्रयान, मंगल ग्रिहन, भृहिणी आज्ञार्थरी लमेत अमेठी औरियानो में भारत की प्रतिक्रिया का लोहा विश्व स्वीकार कर दुम्हा है।

भारत किसका लवसे बड़ा लोकर्तन है। स्वतंत्रता के बाद से भारत का लोकर्तन विश्व-वर्त परिपक्व हुआ है। प्रथेक दुम्हों के बाद रांतिधर्णी द्वासे सत्ता का दृष्टान्त भारत की राजनीतिक, स्थिता के साथ इसकी संभाव्यता को भी बढ़ाता है।

आज भारत में क्या आप इस विजेता की पर लगातार अद्धीचे रही हैं। वर्ष 2015 में

भारत सर्वाधिक विदेशी मिक्वा प्राप्त करने वाले देशों में रहा है। और मिलेनियम डेवलपमेंट लक्ष्यों में शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है तो वही शिक्षा को 22% तक सीमित करने में भी सफल रहे हैं।

प्रधानी उपरोक्त लक्ष्यों के बावजूद भारत के अन्य इकायों बनाने के पार्श्व में अमेरिका चुनौतियों विद्यमान हैं।

भारत को विदेशी डेवलपमेंट को कोडलैयुक्ट बनाने की गोभी रुचि है। विश्व रिपोर्ट में यह बात लिह दी चुकी है कि भारत के आधिकारिक भुवरोजगार देश भाग करती है।

देश में 25% जनसंख्या कुर्बां पर विचरित है परन्तु यह केवल 14% का ही घोगदान GDP



मानव विकास एवं स्वतंत्रता पर भारत महायज्ञ  
श्रेणी के देश के रूप में आता है। लैगिंक  
डोक्याव इसी द्वं लैगिंक समाज सुरक्षा पर  
भी भारत की ध्याति अद्वी चली है।

इसके लायदी देश में स्वास्थ्य सेवना के  
विकास, आखार इत सेवना में व्यापक मिक्स  
की बड़ी उन्नीति है।

इन उन्नीतियों से निम्नों के लिए सटकार  
जारा ऐक इन दार्तिया, डिजिटल इविड्या, स्वरद  
भारत अमियान जैसे प्रदर्शनी काम उठाये जाये हैं।

FDI को रक्षा स्पेस, रेलवे बोर्डर सभी  
क्षेत्रों के लिए 100% तक खोल दिया जाया है।  
कौशल भारत अमियान द्वे रोजार स्वजन का  
प्रयास किया जा रहा है।

Add no.

प्रश्न याचा  
Question No.



नेश्वे भारत का त्रिसीण अपनी योग्यताओं  
पर विश्वास, अपनी उपलब्धियों पर राखि करें।  
के साथ ही मात्र इनीति के लिए की उम्मीद  
इवं प्रभावी रणनीति के ही सफल होगी।  
जीवं भारत में इसितरप से पुनः विश्वं गुरुकं  
पद पर आवीन होने की लमहत योग्यता  
रखता है। इस दृष्टि विश्वास है कि  
हमें हम कामयाब, हम हमें कामयाब, हम हमें कामयाब  
करना है कि --- मनसे है विश्वास, दूरा है विश्वास

65